# RNA : Real News Analysis

# DAILY CURRENT AFFAIRS

**UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,**
**और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण**

**DATE**
**नवंबर**
**01**
**2025**

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

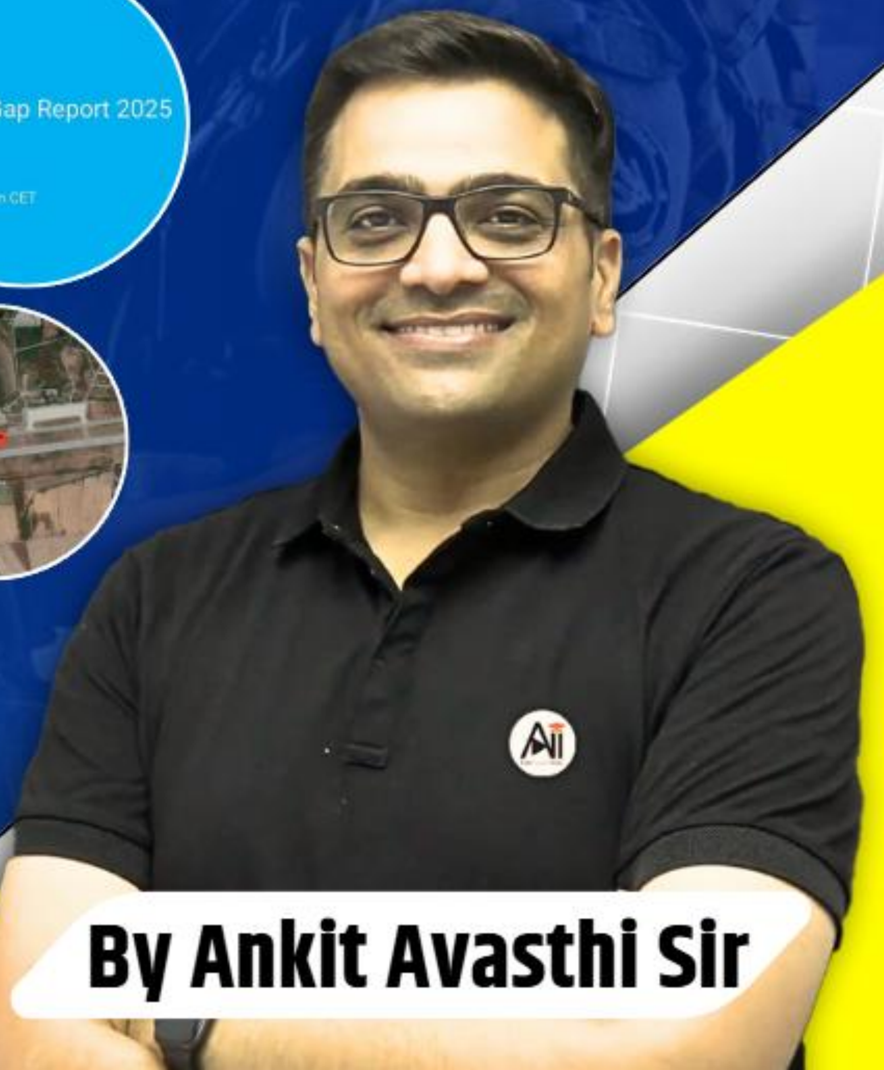

**By Ankit Avasthi Sir**

# सरदार वल्लभभाई पटेल / Sardar Vallabhbhai Patel

**संदर्भ:**

भारत के राष्ट्रपति ने **सरदार वल्लभभाई पटेल** की 150वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इसी दिन, भारत के प्रधानमंत्री ने गुजरात के एकता नगर, केवड़िया में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्र का नेतृत्व करते हुए **राष्ट्रीय एकता दिवस (Rashtriya Ekta Diwas)** मनाया। यह आयोजन देश के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में किया गया।

**Rashtriya Ekta Diwas 2025:**

- **उद्देश्य:** 31 अक्टूबर को राष्ट्र की एकता और अखंडता के प्रतीक सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस (Rashtriya Ekta Diwas) मनाया जाता है। इसका उद्देश्य भारत की "विविधता में एकता (Unity in Diversity)" की भावना को सशक्त करना है।
- **ग्रीन मोबिलिटी पहल:** प्रधानमंत्री द्वारा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी क्षेत्र में इको-फ्रेंडली परिवहन को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रिक बसों का शुभारंभ किया गया।
- **स्टैच्यू ऑफ यूनिटी:**
  - ऊँचाई: 182 मीटर (दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा)
  - प्रतीक: सरदार पटेल की निर्णायक नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक।
- **आधारभूत ढांचा विकास (₹280 करोड़):** एकता नगर में ₹280 करोड़ की लागत से नए पर्यटन और नागरिक सुविधाओं के विकास कार्य आरंभ किए गए हैं, जिससे क्षेत्रीय विकास और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

**Sardar Vallabhbhai Patel: भारत के लौह पुरुष**

- **जन्म:** 31 अक्टूबर 1875 को *नडियाद (गुजरात)* में *लेउवा पटेल पाटीदार समुदाय* में जन्म।
- **शिक्षा:**
  - *कानून की पढ़ाई* पूरी की और *इंग्लैंड* जाकर *बैरिस्टर* बने।
  - भारत लौटने के बाद *अहमदाबाद* में कानूनी अभ्यास शुरू किया।
- **भारत के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान:**
  - अक्टूबर 1917 में महात्मा गांधी से मुलाकात ने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया।
  - 1917 में अहमदाबाद के सैनिटेशन कमिश्नर के रूप में जीवन की शुरुआत की।
  - 1924–1928 तक अहमदाबाद नगरपालिका समिति के चेयरमैन रहे।
  - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़कर गुजरात में सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया।
  - 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और *गांधीजी* के साथ मिलकर जन आंदोलन को गति दी।

**स्वतंत्रता के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका**

**पद:** स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री और उपप्रधानमंत्री बने।

**राज्यों का एकीकरण:**

- सरदार पटेल ने *560 से अधिक रियासतों* का भारत संघ में एकीकरण किया।
- यह कार्य भारत की राजनीतिक एकता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक माना जाता है।

**सेना में नेतृत्व:** भारत के राजनीतिक एकीकरण और 1947 के भारत-पाक युद्ध के दौरान उन्हें भारतीय सेना का वास्तविक सर्वोच्च सेनापति माना गया।

**एकता का दृष्टिकोण:** उनके राष्ट्र एकता के स्वप्न की परिणति आगे के ऐतिहासिक कदमों में देखी गई –

- गोवा का भारत में विलय (1961)
- सिक्किम का भारत में विलय (1975)
- अनुच्छेद 370 का निरसन (2019)

इन घटनाओं ने 'पूर्ण अखंड भारत' के सपने को साकार किया।

**सरदार पटेल और सत्याग्रह आंदोलन**

**खेड़ा सत्याग्रह (1918):**

**उद्देश्य:** फसल खराब होने के बाद भूमि *राजस्व में छूट* की मांग।

- आंदोलन की प्रकृति: तीन महीने लंबा शांतिपूर्ण सत्याग्रह, जिसमें किसानों ने अत्यधिक ब्रिटिश दमन के बावजूद धैर्य बनाए रखा।
- परिणाम: ब्रिटिश सरकार को *राजस्व माफी* देने पर मजबूर होना पड़ा।

**बारडोली सत्याग्रह (1928):**

**कारण:** ब्रिटिश सरकार द्वारा भूमि राजस्व में 22% से 60% तक वृद्धि।

**नेतृत्व:** सरदार पटेल ने किसानों को अनुशासन और एकता के साथ संगठित कर आंदोलन का नेतृत्व किया।

**परिणाम:** आंदोलन की सफलता पर महात्मा गांधी ने उन्हें "सरदार" की उपाधि दी।

**प्रभाव:** इस आंदोलन ने उन्हें अहिंसक प्रतिरोध के प्रतीक और नागरिक अवज्ञा आंदोलन के प्रमुख नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया।

# भारत ने वित्त वर्ष 2026 तक रिकॉर्ड 6 गीगावाट पवन ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य / India Targets Record 6 GW Wind Energy Addition by FY 2026

**संदर्भ:**

भारत ने वित्त वर्ष **2025-26 (FY26)** के अंत तक **6 गीगावॉट (GW)** नई पवन ऊर्जा क्षमता जोड़ने का लक्ष्य तय किया है। यह अब तक का सबसे बड़ा वार्षिक लक्ष्य है, जो देश के **नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार** और **जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करने** की दिशा में एक मजबूत कदम है।

**भारत के पवन ऊर्जा क्षेत्र के प्रमुख लक्ष्य और माइलस्टोन:**

- **FY26 अनुमान:**
  - वर्ष 2025-26 में **6 गीगावॉट (GW)** नई पवन ऊर्जा क्षमता जुड़ने की उम्मीद है।
  - इसमें से **3 GW पहली छमाही** में और **3 GW दूसरी छमाही** में जोड़े जाएंगे।
- **FY27 अनुमान:**
  - यह वृद्धि दर जारी रहने की संभावना है, जिसमें वार्षिक औसत वृद्धि **7.1 GW** तक पहुंच सकती है।
  - इस रफ्तार से देश की **कुल स्थापित पवन क्षमता FY27 के अंत तक 63 GW** हो जाएगी।
- **2030 के लक्ष्य:** यह रिकॉर्ड वृद्धि भारत के व्यापक लक्ष्य से मेल खाती है, जिसके तहत वर्ष 2030 तक 100 GW पवन ऊर्जा क्षमता और 500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित कुल ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य है।
- **ऑफशोर पवन ऊर्जा विस्तार:**
  - नव एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा Viability Gap Funding के माध्यम से 1 GW ऑफशोर पवन परियोजनाओं को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।
  - गुजरात और तमिलनाडु तटों पर संभावित परियोजनाओं के लिए फरवरी 2026 तक निविदाएं (tenders) जारी होने की उम्मीद है।

**भारत में पवन ऊर्जा (Wind Energy in India):**

- **वैश्विक स्थिति:** भारत विश्व में चौथा सबसे बड़ा पवन ऊर्जा उत्पादक देश है।
- **कुल स्थापित क्षमता:**
  - 51.67 गीगावाट (GW) – 12 अगस्त 2025 तक।
  - 4.15 GW क्षमता वित्त वर्ष 2024-25 में जोड़ी गई।
- **विद्युत उत्पादन में योगदान:**
  - अप्रैल 2024 से फरवरी 2025 के बीच 78.21 अरब यूनिट बिजली का उत्पादन।
  - यह देश की कुल विद्युत उत्पादन का 4.69% है।
- **संभावित पवन ऊर्जा क्षमता:** राष्ट्रीय पवन ऊर्जा संस्थान (NIWE) के अनुसार, भारत में 150 मीटर ऊँचाई पर अनुमानित 1,164 GW की पवन ऊर्जा क्षमता उपलब्ध है।

**भारत में पवन ऊर्जा का महत्व:**

**स्वच्छ ऊर्जा स्रोत:**

- पवन ऊर्जा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन रहित है।
- यह भारत के राष्ट्रीय रूप से निर्धारित योगदान (NDCs) और नेट जीरो 2070 लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाती है।

**ग्रामीण और तटीय विकास:**

- अधिकांश पवन ऊर्जा संयंत्र ग्रामीण व तटीय क्षेत्रों में स्थापित हैं।
- इससे स्थानीय अवसंरचना विकास, रोजगार सृजन और समुदाय की आय में वृद्धि होती है।

**सतत विकास को बढ़ावा:**

- दूरस्थ क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति सुनिश्चित कर समावेशी विकास को प्रोत्साहित करती है।
- तेजी से बढ़ती ऊर्जा मांग को सतत और पर्यावरण अनुकूल तरीके से पूरा करने में सहायक है।

**पवन ऊर्जा के लिए सरकारी पहल:**

- **राष्ट्रीय पवन ऊर्जा मिशन:** वर्ष 2030 तक 140 GW क्षमता का लक्ष्य रखा गया है ताकि नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दिया जा सके।
- **घरेलू निर्माण को बढ़ावा:** स्थानीय सामग्री को 70% से बढ़ाकर 85% तक करने का लक्ष्य, "मेक इन इंडिया" को मजबूत करने के लिए।
- **कर राहत:** पवन उपकरणों पर GST 12% से घटाकर 5% किया गया, जिससे प्रति मेगावाट लगभग ₹25 लाख की लागत में कमी आएगी।
- **वैश्विक लक्ष्य:** ALMM-Wind पहल के तहत भारत का उद्देश्य 2030 तक वैश्विक मांग का 10% और 2040 तक 20% हिस्सा पूरा करने का है।
- **वायबिलिटी गैप फंडिंग:** केंद्र सरकार ने ₹7,453 करोड़ की मंजूरी दी है, जिसके तहत गुजरात और तमिलनाडु तट पर 1 GW ऑफशोर पवन परियोजनाएँ और बंदरगाहों का उन्नयन किया जाएगा।

# एडेप्टेशन गैप रिपोर्ट (AGR) 2025 / Adaptation Gap Report (AGR) 2025

**संदर्भ:**

**संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)** द्वारा जारी **एडाप्टेशन गैप रिपोर्ट (AGR) 2025** में चेतावनी दी गई है कि जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे जलवायु अनुकूलन के प्रयासों में वित्तीय कमी और अधिक गंभीर होती जा रही है। रिपोर्ट में वैश्विक सहयोग की तात्कालिक आवश्यकता पर बल दिया गया है ताकि दुनिया जलवायु लचीलापन और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्रभावी रूप से प्राप्त कर सके।

## एडेप्टेशन गैप रिपोर्ट (AGR) 2025: प्रमुख बिंदु-

**बढ़ती अनुकूलन वित्तीय आवश्यकता:**

- विकासशील देशों को 2035 तक हर वर्ष 310–365 अरब डॉलर की जरूरत होगी जलवायु अनुकूलन के लिए।
- मुद्रास्फीति समायोजन के बाद, यह आवश्यकता 440–520 अरब डॉलर प्रति वर्ष तक पहुंच सकती है।
- यह अनुमान तीव्र और धीमी गति से बढ़ते जलवायु प्रभावों और उनके निवारण की बढ़ती लागत को दर्शाता है।

**वित्तीय अंतर (Finance Gap) का बढ़ना:**

- 2023 में अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक अनुकूलन वित्त मात्र 26 अरब डॉलर रहा।
- परिणामस्वरूप, हर वर्ष 284–339 अरब डॉलर का अंतर बना हुआ है, जिससे मौजूदा फंडिंग बेहद अपर्याप्त है।

**वैश्विक लक्ष्यों की पूर्ति में विफलता:**

- ग्लासगो क्लाइमेट पैक्ट (2021) के तहत 2019 के अनुकूलन वित्त को 2025 तक दोगुना (40 अरब डॉलर) करने का लक्ष्य अब अधूरा रह जाएगा।
- नया सामूहिक मात्रात्मक लक्ष्य (NCQG) - 2035 तक 300 अरब डॉलर - भी मुद्रास्फीति समायोजित नहीं है, इसलिए यह अपर्याप्त माना गया है।

**जलवायु फंडिंग तंत्र के माध्यम से सहायता:**

- एडेप्टेशन फंड, ग्लोबल एनवायरनमेंट फैसिलिटी (GEF) और ग्रीन क्लाइमेट फंड (GCF) के जरिए समर्थन 2024 में 920 मिलियन डॉलर तक पहुंचा, जो 2019–23 औसत से 86% अधिक है।
- UNEP का मानना है कि यह वृद्धि अल्पकालिक हो सकती है, क्योंकि कई देशों पर वित्तीय दबाव बढ़ रहा है।

**असमान बोझ और धीमी प्रगति:**

- विकासशील देशों पर **अनुकूलन फंडिंग का असमान बोझ** है — लगभग **58% फंड ऋण** के रूप में मिलता है, जिनमें अधिकतर **गैर-रियायती ऋण** होते हैं।
- इससे **दीर्घकालिक कर्ज संकट** और **जलवायु न्याय असमानता** दोनों बढ़ते हैं।

- **197 में से 172 देशों** के पास राष्ट्रीय अनुकूलन योजनाएं हैं, लेकिन **36 योजनाएं पुरानी** हो चुकी हैं।
- **छोटे द्वीपीय विकासशील देश (SIDS)** ने अपने राष्ट्रीय नीतियों में **अनुकूलन के सर्वोत्तम एकीकरण** का प्रदर्शन किया है।

## एडेप्टेशन गैप रिपोर्ट 2025: प्रमुख सिफारिशें

**'बाकू से बेलेम रोडमैप' को तेज़ी से लागू करना:** UNFCCC के COP-29 में अपनाया गया यह रोडमैप विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त को 2035 तक हर वर्ष 1.3 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ाने का आह्वान करता है।

**निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना:**

- वर्तमान में निजी क्षेत्र का योगदान लगभग 5 अरब डॉलर प्रति वर्ष है।
- सहायक नीतियों और ब्लेंडेड फाइनेंस मॉडल से इसे 50 अरब डॉलर प्रति वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है — हालांकि यह कुल आवश्यकता का एक छोटा हिस्सा ही होगा।
- ब्लेंडेड फाइनेंस और पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) के माध्यम से निवेश जोखिम को कम करने की सिफारिश की गई है।

**अनुदान और रियायती वित्त को प्राथमिकता देना:**

- नए कर्ज जाल (Debt Traps) से बचने के लिए गैर-ऋण आधारित साधनों पर ध्यान देने की जरूरत है।
- अनुदान, रियायती सहायता और जीवाश्म ईंधन सब्सिडी में कमी कर उस संसाधन को अनुकूलन प्रयासों की ओर मोड़ने पर जोर दिया गया है।

**वित्तीय प्रणाली में लचीलापन एकीकृत करना:** बैंकों, निवेशकों और बीमा कंपनियों को अपने निर्णयों में जलवायु जोखिम आकलन शामिल करने की सिफारिश की गई है।

**शमन को सशक्त बनाना:** रिपोर्ट के अनुसार, **उत्सर्जन में कमी** से भविष्य के जलवायु प्रभावों की तीव्रता घटाई जा सकती है, जिससे **अनुकूलन लागत** भी सीमित रहेगी।

# आयनी एयरबेस / Ayni Airbase

**संदर्भ:**

भारत ने ताजिकिस्तान स्थित **आयनी एयरबेस** से लगभग **दो दशक पुरानी सैन्य उपस्थिति** को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया है।

- **भारत के विदेश मंत्रालय (MEA)** ने **30 अक्टूबर 2025** को इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि यह कदम **भारत और ताजिकिस्तान के बीच द्विपक्षीय समझौते के 2022 में समाप्त होने** के बाद उठाया गया।

## भारत का ताजिकिस्तान से सैन्य वापसी प्रक्रिया: प्रमुख तथ्य

### वापसी की प्रक्रिया:

- **समयरेखा:** भारत ने आधिकारिक रूप से वापसी की पुष्टि 2025 के अंत में की, हालांकि रिपोर्टों के अनुसार भारतीय सैन्य कर्मी और उपकरण 2022 से 2023 की शुरुआत के बीच पूरी तरह हटा लिए गए।
- **पृष्ठभूमि:** भारत ने 2002 से ताजिकिस्तान में सोवियत युग के एयरबेस के आधुनिकीकरण पर लगभग 70 मिलियन डॉलर निवेश किए थे। इसमें रनवे को भारी विमानों के लिए उपयुक्त बनाना, हैंगर, ईंधन डिपो और एयर ट्रैफिक कंट्रोल इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण शामिल था।
- **हस्तांतरण:** वापसी के बाद यह एयरबेस ताजिक सैन्य बलों को सौंप दिया गया, और अब इसकी परिचालन जिम्मेदारी रूसी बलों ने संभाल ली है।

### वापसी के कारण:

- **समझौते की समाप्ति:** भारत और ताजिकिस्तान के बीच एयरबेस के संयुक्त संचालन का **द्विपक्षीय समझौता समाप्त हो गया**, जो वापसी का मुख्य कारण बना।
- **रणनीतिक उपयोगिता में कमी:** 2021 में तालिबान के अफगानिस्तान पर क जे के बाद इस बेस का रणनीतिक महत्व घट गया। पहले यह एंटी-तालिबान नॉर्दर्न अलायंस को समर्थन देने और काबुल से भारतीय कर्मियों की निकासी (2021) के लिए अहम केंद्र था।
- **भू-राजनीतिक दबाव:** ताजिकिस्तान ने भारत की लीज़ बढ़ाने से इंकार कर दिया क्योंकि **रूस और चीन** ने दबाव डाला, जो भारत को अपने प्रभाव क्षेत्र में "गैर-क्षेत्रीय शक्ति" मानते हैं।
  - **चीन** को यह बेस उसके **शिनजियांग सीमा** के पास भारत की मौजूदगी के कारण असहज लग रहा था।
  - **रूस**, जो यूक्रेन युद्ध के बाद चीन पर अधिक निर्भर हो गया है, अब मध्य एशिया में **प्रतिस्पर्धी सैन्य उपस्थिति** का समर्थन नहीं करता।

### भारत की वापसी का प्रभाव:

- **क्षेत्रीय उपस्थिति की हानि:** यह भारत के एकमात्र विदेशी सैन्य ठिकाने की समाप्ति है, जिसे कुछ विश्लेषक भारत की सामरिक शक्ति-प्रक्षेपण (Power Projection) नीति के लिए झटका मानते हैं।
- **क्षेत्रीय शून्यता:** भारत की वापसी से पैदा हुए रणनीतिक खालीपन को रूस और चीन भरने की संभावना है, जिससे इस क्षेत्र में उनका प्रभाव और मजबूत होगा।
- **नई रणनीतिक दिशा:** हालांकि भारत अब इस बेस का संचालन नहीं करता, लेकिन वह अपनी **"कनेक्ट सेंट्रल एशिया" नीति** के तहत क्षेत्रीय **राजनयिक और सुरक्षा सहयोग** को जारी रखे हुए है।

### आयनी एयरबेस (Ayni Airbase): प्रमुख तथ्य

- **स्थान:** आयनी एयरबेस, जिसे गिस्सार मिलिट्री एयरोड्रोम के नाम से भी जाना जाता है, ताजिकिस्तान में स्थित है।
- **भौगोलिक स्थिति:** यह राजधानी दुशांबे से लगभग 10–15 किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित है।
- **रणनीतिक महत्व:** अफगानिस्तान के वाखान कॉरिडोर के निकट होने के कारण, यह बेस भारत के लिए मध्य एशिया में सामरिक उपस्थिति का प्रमुख केंद्र रहा।
- **ऐतिहासिक भूमिका:** लगभग दो दशकों तक भारत ने यहां सैन्य गतिविधियों और लॉजिस्टिक सपोर्ट के माध्यम से अपनी उपस्थिति बनाए रखी, जिससे क्षेत्र में आतंकवाद-रोधी अभियानों और रणनीतिक निगरानी में मदद मिली।
- **हालिया स्थिति:** भारत की हाल की वापसी (2022–2023) के बाद अब इस एयरबेस का संचालन ताजिक और रूसी बलों के नियंत्रण में है।

### अफ़ग़ानिस्तान से निकासी (2021)

इस एयरबेस का सबसे हालिया परिचालन उपयोग 2021 में हुआ था, जब तालिबान के क जे के बाद भारत ने अफ़ग़ानिस्तान से अपने नागरिकों और दूतावास के अधिकारियों को निकालने के लिए इस पर भरोसा किया था।

## भारत के मुख्य न्यायाधीश / CJI

**संदर्भ:**

न्यायमूर्ति **सूर्यकांत** को **भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश (Chief Justice of India – CJI)** के रूप में नियुक्त किया गया है।

वे **24 नवंबर 2025** को पदभार ग्रहण करेंगे, और वर्तमान मुख्य न्यायाधीश **न्यायमूर्ति बी.आर. गवई** के उत्तराधिकारी बनेंगे।

**भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) की नियुक्ति: प्रमुख तथ्य**

**संवैधानिक प्रावधान:** भारत के मुख्य न्यायाधीश और सर्वोच्च न्यायालय के अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति **भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124(2)** के तहत **राष्ट्रपति** द्वारा की जाती है।

**नियुक्ति की प्रक्रिया:**

- सामान्यत: सुप्रीम कोर्ट के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश, जिन्हें इस पद के लिए उपयुक्त माना जाता है, को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया जाता है।
- कानून मंत्री सेवानिवृत्त होने वाले मुख्य न्यायाधीश से उनके उत्तराधिकारी का नाम सुझाने को कहते हैं।
- यह सिफारिश प्रधानमंत्री को भेजी जाती है, जो राष्ट्रपति को अंतिम अनुमोदन के लिए सलाह देते हैं।

**अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति:**

- अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कोलेजियम प्रणाली के तहत नाम सुझाए जाते हैं।
- कोलेजियम में सुप्रीम कोर्ट के पांच वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल होते हैं।
- कोलेजियम संबंधित वरिष्ठ न्यायाधीशों की लिखित राय प्राप्त करता है।
- यद्यपि यह प्रणाली संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लिखित नहीं है, परंतु यह पहले और तीसरे न्यायाधीश मामलों (Judges Cases) के निर्णयों से विकसित हुई है, जिसके बाद नियुक्ति की शक्ति कार्यपालिका से न्यायपालिका को स्थानांतरित हो गई।

**सरकार की भूमिका:** सरकार उम्मीदवार की **पृष्ठभूमि की जांच** कर सकती है और अपनी आपत्तियाँ दर्ज करा सकती है, लेकिन **अंतिम निर्णय कोलेजियम का ही प्रभावी** रहता है। **वरिष्ठता का सिद्धांत** नियुक्ति में प्रमुख भूमिका निभाता है।

**पात्रता मानदंड:** मुख्य न्यायाधीश या न्यायाधीश बनने के लिए व्यक्ति को – **भारतीय नागरिक** होना चाहिए, और

- कम से कम 5 वर्षों तक किसी उच्च न्यायालय में न्यायाधीश रह चुका हो, या
- कम से कम 10 वर्षों तक किसी उच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहा हो, या
- राष्ट्रपति द्वारा **"प्रतिष्ठित विधिवेत्ता** के रूप में मान्यता प्राप्त हो।

## साइप्रस / Cyprus

**संदर्भ:**

साइप्रस के विदेश मंत्री कॉन्स्टेंटिनोस कॉम्बोस ने कहा कि साइप्रस भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) का हिस्सा बनने के लिए तैयार है।

**साइप्रस (Cyprus): भारत का रणनीतिक साझेदार**

**भौगोलिक परिचय**

- साइप्रस पूर्वी भूमध्य सागर में स्थित एक द्वीपीय राष्ट्र है।
- यह तुर्की से लगभग 40 मील दक्षिण और सीरिया से 60 मील पश्चिम में स्थित है।
- देश ने 1960 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त की।
- 1974 से ग्रीक और तुर्की साइप्रस समुदायों के बीच तनाव के कारण देश वास्तविक रूप से दो भागों में विभाजित है।

**भारत-साइप्रस संबंध**

- भारत और साइप्रस के राजनयिक संबंध 1962 में स्थापित हुए।
- दोनों देशों के बीच संबंध मित्रता, पारस्परिक सम्मान और बहुपक्षीय सहयोग पर आधारित हैं।
- सहयोग के प्रमुख क्षेत्र: राजनीतिक, आर्थिक, और रक्षा सहयोग।
- **अंतरराष्ट्रीय मंचों पर समर्थन:**
  - भारत, साइप्रस के पुनर्एकीकरण को संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों के अनुरूप समर्थन करता है।
  - साइप्रस, भारत की **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता** और **नागरिक परमाणु कार्यक्रम** का समर्थन करता है।

**हालिया पहलें और समझौते**

- दोनों देशों ने **भारत-साइप्रस संयुक्त कार्ययोजना (2025–2029)** की समीक्षा की।
- क्षेत्रीय और बहुपक्षीय मुद्दों पर चर्चा हुई, विशेषकर इस संदर्भ में कि साइप्रस 2026 में **यूरोपीय संघ परिषद** की अध्यक्षता ग्रहण करेगा।
- साइप्रस ने **भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (India-EU FTA)** का समर्थन किया, जिससे द्विपक्षीय व्यापार और निवेश के नए अवसर खुल सकते हैं।

**भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा**

- IMEC की घोषणा **G20 शिखर सम्मेलन 2023 (नई दिल्ली)** में की गई थी।
- उद्देश्य: एशिया, अरब खाड़ी और यूरोप के बीच **आर्थिक एकीकरण और संपर्क को सुदृढ़ करना।**

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazar ki
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात
Baaten Bazar Ki
Ankit Inspires India

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

# PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

\+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)

BBK Baaten Bazaar ki

EMI AVAILABLE

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

**SPECIAL BONUS**

**COURSE VALIDITY**
**1 YEAR**